ARYAVART SHODH VIKASH PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBBIL04292
RNI REG. NO. UPBBIL/2014/66218 PP. NO.- 188-190
ISSN NO.-2347-2944
Vol.-8, No.-II, Issues-IX YEAR- Dec-2017

राजेश दयालु ''राजेश'' के अनुपमेय अनुप्रास

डॉ0 मुहम्मद अखलाक
एसोसिएट प्रोफेसर– हिन्दी विभाग, रामसहाय राजकीय महाविद्यालय, बैरी, शिवराजपुर,कानपुर, (उ0प्र0), भारत

कविवर राजेश दयालु "राजेश" व्यक्तित्व और .तित्व दोनों .ष्टियों से विलक्षणताओं से विभूषित हैं। सबसे पहले इनकी प्रतिष्ठा ब्रजभाषा कवि के रूप में हुई, जबकि आधुनिकयुगीन साहित्य–सम्राट डा0 शुकदेव बिहारी मिश्र ने इनके दोहो का सटीक संकलन "राजेश–दोहावली" से प्रस्तुत किया, जो कि सन् 1951 में प्रकाशित हुआ था। सन् 1979 अवधी–भाषा में विरचित इनका "बरवै–हजारा'' छपा, जिससे कि ये अवधी भाषा के परमोत्.ष्ट बरवैकार के रूप में समा.त हुए। 'बरवै–हजारा' 'उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान', लखनऊ से पुरस्.त भी हुआ। खड़ी बोली की भी इनकी रचनाएं बाद में सामने आईं, जिसमें सर्वाग्रगण्य है इनका प्रबन्धकाव्य "चौतन्य–चन्द्रिका", जो एक ओर तुलसीकृत 'रामचरित मानस' से सवा गुना बड़ा है (15,000 से अधिक पंक्तियों का) और दूसरी ओर महाकाव्य के प्रायः सभी गुणों को परिसीमा पर पहुँचाने में सक्षम है।

आपकी दोहाकारिता के सम्बन्ध में राय.ष्णदास का मत है, "भक्ति की विभोरत्ता में राजेश जी सूर, तुलसी औरमीरा के समान हैं, तो श्रृंगार की सरसता और संकेतात्मक विदुष शैली में आप बिहारी की समकक्षता प्राप्त करते हैं। बिहारी, तुलसी, कबीर, रसनिधि, वृंद, रहीम और वियोगी हरि के दोहों में जो रस–माधुरी, जो कला–कौशल औरजो भावोत्कर्ष है, वह सब राजेश जी की सतसई में विद्यमान है। आपको यदि अभिनव बिहारी कहा जाय तो न्याय हीहोगा। राजेश जी अभूतपूर्व दोहाकार हैं, अमर साहित्यकार हैं, यह असंदिग्ध है।

राजेश जी से वार्ता का सौमाग्यप्राप्त करके तथा उनके काव्यके परिशीलन से मैं अत्यन्त प्रभावित हुआ, जोआठ वर्ष वाणी और .ष्टि का भी मौनवृत धारण करके आध्यात्मिक साधना में लीन रहे, जिन्होंने सौ मील से अधिकलम्बी यात्रा (शाहजहॉपुर से लखनऊ तक) लगभग 25 वर्ष की आयु में नंगे हाथ नंगे पैरों अकेले की। इन विलक्षणव्यक्तित्व वाले राजेश जी का काव्य यदि लोकोत्तर है तो विस्मय ही क्या?

राजेश जी रससिद्ध कवि हैं। उनका भाव–पक्ष जितना सबल है, उतना ही सबल कला पक्ष भी है, यहाँ हमइनके काव्य में अनुप्रास अलंकारों की अनुपमेयता की चर्चा करेंगे।

सर्वप्रथम 'राजेश' जी के वे दोहे देखिये, जिनके द्वितीय दल वृत्त्यानुप्रास–विभा– विलसित हैं और बिहारी के 'आनन ओप उजास'' 'प्रेम–पयोधि पगारू', मैना मैन मवास' का अनुगमन करने वाले हैं।

थोरे जीवन में लला! नैंक न छौंड़ौ संग। लागी काल अनादि ते औनी अंबर अंग ।।
अनलिखियत, लखियत अली! पिय बिनु आज अगार। लागै तमहिं दिवार पै दीह दुजीह दरार।।
सब जानत अनजान बनि बिरत सुजन सकानि। प्रकट होन नहि देत जग जीहा, जीय, जवानि।।

ऐसा वृत्त्यानुप्रस यंत्र–तंत्र छंदके प्रथम, द्वितीयया तृतीय चरण का भी मंडन करता मिलता है, यथा–

बिरह–बन्हि बारे बृथा कहा संचिहौ पाप। रूप–भानु मैं रावरे बर्‌यौ जात हों आप ।।
खाँचि कै मूरति रहि गयी, रचि कै गौ रूप। मृदुता–माधुरि–महमही, अँग–अँग अकथ अनूप ।।

उपयुर्कत दोहे की भाँति और भी अनेक हैं, जिनका पूरा एक दल वृत्त्यानुप्रासमय है–

लोल लोयननि लाल लखि, चहि चित चले चुराय। नेह मेह बरसन लग्यौ, हेत–खेत लहराय ।।
सुधरी–सँवरी साँवरी, नीरज–नैनी नारि। मो मनु निपटु अमलुमलिन कियौ सहज पट धारि।।

समग्र कलेवर से वृत्त्यनुप्रास–विभा विकीर्ण करने वाला निम्नॉकित दोहा विशेष उल्लेखनीय हैं–

सुगम सगे संगी, सुगति– सागर, सुर–सम्मान। सरल, सहज सुन्दर, सरस, स्यामै स्याम समान।।

एक पूरी पंक्ति में वृत्त्यानुप्रास–विलास अवधी भाषा के "बरवै–हजारा" में विशेष रूप से विमोहक बन गया है– **जो लागे तेहि जागै धीर अधीर । गोरी–गरे गियनवौं गहिर गँभीर।।**

प्रगट न बिस्व चतुरइ बिधि–खिलवार। बिसे बिधुहिं बनज बरि बिख बरिआर ।।
जल–थल–कमल खिले ससि छबि धारि। पेखि प्रसंसत प्रेमी प्रान पँवारि ।।

उपर्युक्त उदाहरण निर्भीक उद्घोष करते हैं कि राजेश जी अनुप्रास मंजिमा में देव–बिहारी–स.श कलाकारों को भी बहुत पीछे छोड़ आये हैं, जिसका रहस्य निम्नांकित है–

अनुरूपी लेखक

"कवि का उद्देश्य भाव–प्रकाशन ही है, भाव स्वयम् ही इतना मधुर और विलक्षण होता है कि अलंकार उसके प्रकाशन में आ जाते हैं।"

अब अन्त्यानुप्रास के उदाहरणों की अपूर्व कांति देखिये। इनमें सर्वाधिक सुष्ठ है निम्नाँकित दोहा, जिसमें एक दल में 24 मात्राओं की सीमा में 'त' वर्ण 10 बार प्रयुक्त है, पर भावाभिव्यंजना के मार्ग में बाधक न होकर सहायक है। ऐसाउदाहरण समस्त हिन्दी साहित्य में दुर्लभ है–

रति पति जित चित–मित–खँचित हित–पित कित नंदजात। नैन सैन सौं चौन दै गे अधीर करित गात ।।

अबा अन्त्यानुप्रास के अन्य विविध सौष्ठव भी देखिये–

निज बिचारि समुझावते, लेते अवसि सुधारि। पेखि अनंग–मग–पग अमग लाल गये मोहि डारि।
छँटी–छँटीलहिं गोरटी बलै–घटी दुख देत। जोग रखौ, जोगये रखौ, जोग जोग के हेत।।
मारत है नेता गिरी, पारत बिपति बिसाल। भारत भू के लाल हैं, आरत भू के लाल ।।

दोहे के प्रथम–द्वितीय अथवा तृतीय–चतुर्थ चरण–युग्म में प्रत्येक चरण के एक–एक शब्द में विलसितअन्त्यानुप्रास की छटा और अच्छी तरहं निखर उठती है:–

कथा और आगे बढ़ी धारी विधा कौ रूप। कान दिये सब सुनत हौ, तुमहूँ सजन अनूप ।।
हेमु नारि–सिगारू है प्रेम पुरूष— सिगारू। सोहे तोहिं कठोरता मोहि ताप–संचारू ।।

ऐसे प्रयोग बिहारी–सतसई में भी मिलते हैं, जिनका सौष्ठव–संवर्द्धन उपर्युक्त दोहे में हुआ है। कतिपय विलक्षण प्रयोग और देखिये–

का ताकति मो तमु तमकि, मकु मा तौ मो मानु। कभी केतु की कैं तकी तौ कामे! तौ कामु।।

अब राजेश दयालु "राजेश" का वह दोहा, देखिये, जिसका प्रत्येक शब्द अनुप्रास–योजना में स्वभावतया संलग्न है–

नैन–चकोर पियौ चह अमिय मयूरू विचारिः। मुख–मयंक सौं सुन्दरि! घूँघट घनहि निवारि।।
छेकानुप्रास तो वृत्त्यानुप्रास का अंश–सा है, अतः इसके एक ही उदाहरण देना पर्याप्त होगा–
चारि दिना मैं दरकहि, यामैं संक न कोइ। लल बाढ़तै जात है हियरौ छौटौ होइ।।

लाटानुप्रास की भी ऐसी ही कांति 'राजेश–साहित्य' में मिलती है।शोध पत्र का कलेवर सीमित रखने हेतु केवल एक उदाहरण ही दिया जा रहा है–

जों इक नाहीं, आन सों, जों इक नाहीं आन। जगहिं एक कौ एक सौ कारजु चलै निदान।।

उपर्युक्त विवेचन से सुस्पष्ट हैं कि राजेश जी के काव्य–साहित्य में कला–कौशल–कांत भावगर्भित शब्द–सौष्ठव हमें उच्चतम रसानन्द–भूमि पर विचरण कराने में समर्थ है। मैं राजेश जी की काव्यप्रतिभा से सम्बन्ध में कतिपय विद्ववानो कि संक्षिप्त टिप्पणियों के साथअपनी बात समाप्त करता हूँ–

"राजेश जी ब्रजभाषा के सिद्ध और प्रसिद्ध कवि हैं। हम उनके काव्य–सौष्ठव, पद–लालित्य, अर्थ–गौरव औरचमत्कार के कायल हैं।"

राजेश जी सिद्धहस्त कवि हैं। ब्रजभाषा, अवधी और खड़ी बोली पर उनका अद्भुत अधिकार है। कवि को जो भाव छूता है, उसे ही वह काव्य–रूप में परिणत करता है। भावों की सहजता और अभिव्यंजना में बांकपन, यह राजेश जी के काव्य की बड़ी विशेषता है। उनकी अभिव्यंजना में एक विशेष सुगन्ध है, जिसे कोई सुगन्ध – को पारखी ही जान सकता है।

–रामफेर त्रिपाठी

राजेश जी के दोहे. पठनीय, श्रवणीय, रमणीथ और मननीय हैं।इन दोहों से परितृप्त होकर भी हम तृप्त नहीं होते, चाहते हैं कि यहरसास्वाद निरन्तर बना रहे।

दोहाकारिता, काव्य–कला और संकेत–चातुर्य में तो राजेश के दोहेअनेक बार बिहारी से टक्कर लेते हैं । बिहारी, तुलसी, कबीर, रसनिधिबृन्द, रहीम और वियोगी हरि के दोहों में जो. रस माधुरी जो कला–कौशलऔर जो भावोत्कषंहै, वह सब राजेश जी की सतसई में बिद्यमान है।आपको यदि अभिनव–बिहारी कहा जाये तो न्याध्य होगा।

–राय कृष्णदास

श्री राजेश जी ब्रजभाषा के सिद्ध कवि हैं।. ब्रजभाशा पर उन्हेंअसाधारण अधिकार है। ब्रजभाषा के जीवत कवियों में वे प्रथंम पंक्तिके अधिकारी हैं । हम उनके– काव्य के सौष्ठव, पद–लालित्य, अर्थ–गौरव और चमत्कार के कायल हैं ।

–श्री नारायण चतुर्वेदी

राजेश–सतसई प्रेम, विरह, भक्ति, निर्वेद आदि भावों के साथ–साथलोक–नीति और जीवन–दर्शन की भी अनेक बातों को प्रकट करती है।लेखक स्वयं भक्ति–पथ का पथी है, यह जीवन भौर रचना दोनोही केद्वारा स्पष्ट है। यही कारण है कि सतसई की. रचना में जो तन्मयता,संयम, गूढ भाव, सूक्ष्म .ष्टि, बारीक संकेत और उपयुक्त शब्द–प्रयोग मिलते हैं, वे आधुनिक काव्य में सुदुलभ्य हैं।

हम कह सकते हैं. कि राजेश जी के दोहें भक्ति की विभोरता में.तुलसी, सूर, मीरा, रसनिधि के काव्य की, श्रृंगार क्री सरसता में बिहारी की तथा वीर भाव की अभिव्यक्ति में वियोगी हरि के दोहों की समकक्षताप्राप्त करते हैं।28

–भगीरथ मिश्र

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. राजेश सतसई / राजेश दयालु राजेश / भूमिका राय.ष्ण दास
2. राजेश सतसई / राजेश दयालु राजेश
3. राजेश सतसई / राजेश दयालु राजेश
4. राजेश सतसई / राजेश दयालु राजेश
5. राजेश सतसई / राजेश दयालु राजेश
6. राजेश सतसई / राजेश दयालु राजेश
7. राजेश सतसई / राजेश दयालु राजेश
8. राजेश सतसई / राजेश दयालु राजेश
9. राजेश सतसई / राजेश दयालु राजेश
10. राजेश सतसई / राजेश दयालु राजेश
11. राजेश सतसई / राजेश दयालु राजेश
12. राजेश सतसई / राजेश दयालु राजेश
13. राजेश दोहावली / राजेश दयालु राजेश / भूमिका भागीरथ मिश्र
14. राजेश सतसई / राजेश दयालु राजेश
15. राजेश सतसई / राजेश दयालु राजेश
16. राजेश सतसई / राजेश दयालु राजेश
17. राजेश सतसई / राजेश दयालु राजेश
18. राजेश सतसई / राजेश दयालु राजेश
19. राजेश सतसई / राजेश दयालु राजेश
20. राजेश सतसई / राजेश दयालु राजेश
21. राजेश सतसई / राजेश दयालु राजेश
23. राजेश सतसई / राजेश दयालु राजेश
24. राजेश दोहावली / श्री नारायण चतुर्वेदी
25. राजेश दोहावली सटीक / मिश्रा बंधू / आवरण पृष्ट 2
26. राजेश दोहावली सटीक / मिश्रा बंधू / आवरण पृष्ट 2
27. राजेश दोहावली सटीक / मिश्रा बंधू / आवरण पृष्ट 2
28. राजेश दोहावली सटीक / मिश्रा बंधू / आवरण पृष्ट 2

*****